यूथ की धड़कन, युगरतन दादी रतनमोहिनी

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर भाई

संगमयुग का समय ईश्वरीय यज्ञ के इतिहास में कई पड़ाव को पार करते हुए सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ता जा रहा है। ऐसे में 8 अप्रैल 2025 में एक और कड़ी जुड़ गई जहाँ हमारी अति स्नेही परम आदरणीया आदिरत्न दादी रतनमोहिनी ने अपनी जीवन यात्रा को सम्पन्न कर सम्पूर्णता को प्राप्त हुईं। परमात्मा ने महापरिवर्तन के कार्य के लिए भाग्यशाली आत्माओं का चयन किया जिनमें से एक दादी रतनमोहिनी भी थीं। दादी के जीवन को अगर देखें तो प्रमुख रूप से चार बातें दिखाई देती थीं। जोकि अलर्ट, एक्यूरेट, पंक्चुअल और इकॉनमी उनके जीवन से झलकती थी। दादी की रूचि पढ़ाई में बहुत थी, नया-नया सीखना और दूसरों को सिखाना, ये उनका निजी गुण था। बाबा की बनाई हुई दिनचर्या को अपनाना, जिस समय जो कार्य होता उसे उसी समय करना और उसका स्वरूप बनकर जीना उनका व्यक्तित्व रहा। बाबा के ज्ञान रत्नों की गहराई में जाकर उसके स्वरूप को अनुभव करना और उसे साथियों के साथ शेयर करना, माना कि जैसे वो उनके जीवन का हिस्सा हो। वें हमेशा मुस्कुराते हुए बहुत सहजता से परमात्म ज्ञान को दूसरों को बताना उनकी खूबी थी। उम्र में भले छोटी थीं किन्तु कहीं पर भी समाज में बड़े लोगों से मिलना और उनको परमात्म ज्ञान देने में न डरती थीं और न घबराती थीं। अपनी बात प्रखरता से तर्क सहित दूसरों के सामने रखती थीं। इसीलिए इन सब विशेताओं के कारण बाबा ने उन्हें टीचर्स को ट्रेनिंग देने का दायित्व सौंपा। बाबा का ये विश्वास उन्होंने कभी नहीं तोड़ा और जीवन पर्यन्त टीचर्स को या यूं कहें कि परमात्म संदेश को विश्वभर में देने हेतु योग्य टीचर्स की टीम तैयार की। सभी में हिम्मत, साहस भरना और सभी को सत्यता पर अडिग रहना सिखाया। आज तक हमने देखा कि अपने जैसे कईयों को तैयार कर विश्व परिवर्तन के कार्य करने के योग्य बनाया।

विशेष रूप से दादी यूथ-ऊर्जा को सही दिशा देकर संगम से सतयुग की ओर आगे बढ़ने का उनमें जज़्बा पैदा किया। वे भी खुशी-खुशी से परमात्मा के कार्य में अपना हाथ बढ़ाकर आज भी अपने भाग्य को चमका रहे हैं। दादी हमेशा अलर्ट रहतीं, वें समय को महत्व देतीं और एक-एक पल को कैसे सफल करना ये हम उनके जीवन से सीख सकते हैं। हमें जब भी दादी जी से मिलने का अवसर मिलता तो दादी हमेशा कहतीं ये बाबा का यज्ञ है, करनकरावनहार बाबा है हमें तो सिर्फ उमंग-उत्साह में रह अपना भाग्य बनाना है। दादी इकॉनमी की अवतार थीं, मैं जब दादी जी से कुछ कार्य अर्थ पाण्डव में स्थित छोटे-से ऑफिस में मिलने गया और दादी जी को अपनी बात बताई। पहले तो दादी जी ने बड़ी स्नेहभरी दृष्टि दी और फिर पूछा कि बताइए, तो मैंने कार्य में आई कठिनाई के बारे में बताया, तो दादी ने बड़े स्नेह से मेरी ओर देखा और टेबल पर रखे एक छोटे-से कागज़ के टुकड़े में लिखा कि 'जो हो रहा है वो अच्छा है और आगे भी अच्छा ही होगा।' मैं यह पढ़कर हल्का हो गया। सचमुच जो मुझे कठिन व मुश्किल लग रहा था वो कार्य दिन बीतते ही बहुत अच्छा हो गया। दादियों के छोटे से उत्तर में भी बड़ी सफलता का छिपा राज़ अनुभव हुआ। कम बोलना, धीरे बोलना, मधुर बोलना और सत्य बोलना ये हमने दादी से सीखा। कहते हैं कि महान व्यक्ति मरने के बाद भी जीवन्त रहता है। हमारी दादी भौतिक जगत से गईं ज़रूर हैं लेकिन वें एक नये विशेष भगीरथ कर्त्तव्य प्रयाण के लिए गई हैं, न कि हमारे बीच से। वो आज भी हमारे साथ हैं, उनकी शिक्षा-दीक्षा हमारे साथ हमेशा रहेंगी और हम भी उसे आत्मसात कर परमात्मा के कार्य को सम्पन्न और सम्पूर्ण करेंगे। ऐसी मीठी दादी जी को लौकिक से अलौकिक कार्य के लिए विदाई नहीं लेकिन बधाई देते हुए हमारे हृदय की गहराइयों से श्रद्धा सुमन अर्पित।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

रोज़ मुरली से मन को होमवर्क दे करके व्यर्थ को समर्थ में चेंज करें...

हमारा बाबा हम बच्चों को अभी दुःखी देख नहीं सकता है, हम लोग तो सुखी हो गए लेकिन दूसरे भी हमारे भाई-बहन जो दुःखी, अशांत हैं, चिंता व भय में हैं, कल क्या होगा इसी सोच में रहते हैं, उन्हों को शान्ति का सहयोग दे करके उनको भी सुख-शान्ति का अनुभव कराना है। अब खुद शक्तिशाली बन मन्सा द्वारा औरों को भी शक्ति देना है, यह हमारा मूल कार्य है, इसी कार्य को करने में बिज़ी रहने से आप बहुत सहज मायाजीत बन सकते हैं क्योंकि माया पहले मन में संकल्प रूप में आती है फिर आगे बढ़ती है। तो अगर आपका मन ही सेवा में बिज़ी रहा तो माया के आने का रास्ता ही नहीं रहेगा इसलिए बाबा कहते मन्सा सेवा में रहने से एक तो हमारा मन बिज़ी रहता है। अन्तर्मुखी हो रहना माना अन्दर में रहना, बॉडी कॉन्शियस से परे रहना, जिससे माया नहीं आयेगी। दूसरा आस-पास में आपके शान्ति का वायुमण्डल का प्रभाव पड़ता है। तीसरा जो भी फाइनल होना है वो अचानक होना है तो हर घड़ी मेरे लिए अटेन्शन देने की है। अचानक होना है तो एवररेडी रहना होगा क्योंकि अन्त मति सो गति होनी है। तो अचानक, एवरेडी और बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। हर सेकण्ड अटेन्शन दे करके टेन्शन में नहीं जायें तो उनका बहुतकाल इकट्ठा हो सकता है। अगर अलबेले होंगे तो वो टाइम कट हो जाता है। इस समय हम सबको बाबा का वरदान है कोई ऐसे नहीं कहे कि हमको तो चांस है ही नहीं या हम तो अभी आये हैं...। इसमें जो ओटे सो अर्जुन, कोई भी मौका ले सकते हैं और जितना चाहो उतना पुरुषार्थ करके आगे बढ़ सकते हैं।

फिर बाबा कहते यह निश्चय रखो कल्प पहले भी मैं ही तो थी, इस कल्प में भी मैं ही हूँ और दूसरे कल्प में भी होंगी। मैं थी, मैं हूँ और मैं होंगी इतना निश्चय और नशा रखना चाहिए। जहाँ निश्चय है वहाँ विजय अवश्य होती है। निश्चय की तो हमेशा विजय होती ही है, निश्चयबुद्धि विजयंति। तो हम सबको यह लक्ष्य रखना है कि मेरा बहुतकाल अभी है लेकिन अभी जो आये हैं तो पल-पल परमात्मा के प्यार में खोया हुआ हो। जहाँ प्यार होता है वो भूलना मुश्किल है, याद करना मुश्किल नहीं होता है। इन बहनों की बहुत अच्छी लाइफ है, बहुत आनंदमय रहते हैं, ऐसे बहनों द्वारा बाप के प्यार की आकर्षण में ही तो यहाँ आये हैं। तो परमात्म प्यार ऐसी चीज़ है जो आप परमात्मा को पसंद आ गये तब तो इन बहनों द्वारा अपना बना लिया। बाबा को हम पसंद आये और हमको बाबा पसंद आये। पसंद आ गया, प्यार हो गया फिर तो भूलने की बात ही नहीं। और कोई भी बात आवे जो आप नहीं समझ सकते हो, क्या करूँ, कैसे करूँ की स्थिति आवे... तो सच्ची दिल से 'मेरा बाबा' कहो तो बाबा हाज़िर होके आपको ऐसी प्रेरणा देगा जो बिल्कुल ही सहज जैसे हुआ ही पड़ा है। असम्भव भी सम्भव हो जायेगा क्योंकि परमात्मा का हाथ हमारे सिर पर है। हमारी दिल सच्ची और साफ है तो बाबा हमारा है, हम बाबा के हैं और है ही क्या? सच्ची और साफ दिल वाले को कब, क्या करना है, कैसे करना है वो टच करता है। समर्थ संकल्प है मुरली, वरदान, स्लोगन इसको कभी भी भूलो नहीं। रोज़ मुरली से मन को होमवर्क दे करके व्यर्थ को समर्थ में चेंज करने का पुरुषार्थ ज़रूर करना। इसके लिए मन का टाइमटेबल बनाना।

जब तक अटैचमेंट है तब तक सुखी रह नहीं सकते

राजयोगिनी दादी जानकी जी

मुरली में ऐसा जादू भरा हुआ है, जो जादूगर की जादूगरी देख अजब लगता है। जादूगर क्या से क्या करते हैं, हम देखते ही रह जाते हैं। तो बाबा भी बहुत मशहूर जादूगर है। भक्ति में समझते थे कृष्ण जादूगर है, पर अनुभव कहता है शिवबाबा जादूगर है। जवानों को बूढ़ा बना देता है, बूढ़ों को जवान बना देता है, यह कमाल है बाबा की। साहूकारों को गरीब बना देता है, साहूकार सेवा में लगाने में बिचारे गरीब हैं, सोचते रहते हैं और गरीब को बाबा साहूकार बना देता है वो पूछता रहता है बाबा आपकी सेवा में मैं क्या करूँ! उसका यज्ञ सेवा के लिए प्यार बहुत, वो गरीब नहीं है। बाबा के लिए वो शाहों का शाह, तीनों लोकों का मालिक है। बाबा कहता है मैं भी तीनों लोकों का मालिक नहीं हूँ, मेरे बच्चे तीनों लोकों के मालिक हैं। चाहे यहाँ रहें, चाहे सूक्ष्म वतन में रहें। बाबा ने इतना हल्का बना दिया है। बालक सो मालिक बनके रहने में मजा है। जो इनोसेन्ट बालक होते हैं उनसे खुशबू बहुत आती है। फूल की तरह खुशबूदार, ऐसे बालक जिसमें कोई भी विकार का अंशमात्र न हो। जैसे विकार का पता ही नहीं है, वो बड़े प्यारे लगते हैं। कोई हैं जो किसी भी जाति देश, धर्म, भाषा के हों लेकिन फूल प्यारा न लगता हो? फलों में है आम और फूलों में है गुलाब। बाबा फल भी प्रत्यक्ष फल देता है। जितना हम प्युअर बनते हैं उतना फूल मुआफिक बनते हैं, जितना खुश रहते हैं उतना फल बन जाते हैं। तो बाबा कैसा जादूगर है जो कांटे को फूल बना देता है।

बाबा कहते खुशी जैसी खुराक नहीं, चिन्ता जैसा मर्ज नहीं। एक-एक बोल लाखों की वैल्यू का है। माला भी हाथ में फेरने के लिए उठानी पड़ेगी। हमें तो केवल बाबा के बोल याद करने हैं बस, खुशी आ गयी। कौन-सा बोल? बच्चे रिमेम्बर मी, जी बाबा। बच्चे 63 जन्म विकर्म किये हैं, अब मुझे याद करो तो विनाश हो जायेंगे, जी बाबा। सबमें जी बाबा करना है। जो डिटैच होना नहीं जानता है वो लविंग कैसे होगा? जब तक अटैचमेन्ट है तब तक सुखी नहीं रह सकता है। लोहे की जंजीरें टूटी, सोने की जंजीरे अच्छी लगती हैं। बाबा का कन्याओं से कितना प्यार है, कन्याओं को बाबा का नाम बाला करना है। अच्छी स्टडी करनी है, अच्छा गुणवान बनना है। जो बाबा को अच्छा लगता है, वो करना है। जहाँ बाबा बिठाता है, वहाँ बैठना है। उसमें आजकल परीक्षा और कोई नहीं है। कोई आवाज़ से बात करता है तो दूसरा ढ़ीला पड़ जाता है। अरे कुछ नहीं है, ड्रामा बड़ा मीठा है, सीख रहे हैं। किसकी नेचर को न याद करो, न याद कराओ, यह भी पाप के खाते में जायेगा। कर्म में नेचर को याद किया, हमारी भी नेचर ऐसी नाजुक बन गयी, तो विकर्म तो विनाश हुआ नहीं। भले समझता है मैं बुरा कर्म तो करता नहीं हूँ, पर नाजुक नेचर वाले में सहनशक्ति है नहीं तो श्रेष्ठ कर्म कर नहीं सकता। हमारी पढ़ाई है- पढ़ते जाओ, प्रैक्टिस करते जाओ, पास होते जाओ।

हमारा फाउंडेशन है बुद्धियोग और नींव है याद की यात्रा...

हम सभी प्यारे बाबा का हर मानव मात्र को शुभ सन्देश, शुभ पैगाम पहुंचाने वाले पैगम्बर अथवा संदेशी हैं। पैगम्बर कौन होता है? इस वैराइटी झाड़ में देखेंगे तो जो भी अपना-अपना धर्म स्थापन करके पैगम्बर बने हैं, वह आत्माएं अपने-अपने समय पर अपने प्यारे बाप के घर से डायरेक्ट आने के कारण सतोगुणी हैं। फिर पीछे चक्र में आते हैं लेकिन हम पैगम्बर उन सबसे निराले हैं। वे बाप के घर से मर्ज हुई आत्माएं आती हैं और हमें बाप सम्मुख में नॉलेज देकर पावन बना रहे हैं। बाप ने हमें सिर्फ नॉलेज नहीं दी लेकिन अपना बनाकर अधिकारी बनाया है, वर्सा दिया है। उन पैगम्बरों को तो कहा आप अपना-अपना पिल्लर खड़ा करो और हमें पैगम्बर बनाया कि तुम्हें सारे विश्व का नव निर्माण करना है। पुराने को खत्म कर नया करना है। सारी विश्व की आत्माओं को मुझ बाप को पैगाम देना है।

बाबा ने हम बच्चों को इस बेहद झाड़ की जड़ में राजयोगी बनाकर बिठाया है- नव निर्माण के लिए। याद की शक्ति का, पवित्रता की शक्ति का जल डालना है। हमें सारे नव निर्माण की नींव पर रखा है। जब कोई मकान बनाते तो उसका पहला आधार नींव पर रहता है। जितना फाउन्डेशन पक्का होगा उतना इमारत का प्लैन रखेंगे। वह पैगम्बर कोई मकान के फाउन्डेशन नहीं, वह तो मरम्मत करने वाले हैं। लेकिन हमें तो नई दुनिया के नव निर्माण के लिए फाउन्डेशन में बाबा ने अन्दर रखा है। हमारा बाबा है फाउन्डर, उसने हमें फाउन्डेशन में रखा है और कहा इसमें योग का बीज डालो, पवित्रता का बीज डालो और इस ज्ञान की शक्ति से इस इमारत को मजबूत करो।

एक तरफ हम नींव हैं, दूसरे तरफ हमें बाबा का पैगाम देना है कि बाप आया है- नव निर्माण करने। हमें बाबा ने सन्देशी बनाया है कि चारों तरफ मेरा सन्देश दो। एक तरफ हम राजयोगी, पवित्रता का दान देने वाले योगी बच्चे हैं, हमारा योग ही सहयोग है। पवित्रता ही हमारा सहयोग है। यही हम बाप को नव निर्माण के लिए सहयोग देते हैं। हम नव निर्माण के आधार हैं। हमारे आधार पर ही सृष्टि का उद्धार होना है। दूसरा हम पैगम्बर हैं।

वह पैगम्बर आते हैं अपना धर्म स्थापन करने और हम कल्प के आदि में आये फिर जा रहे हैं। अभी हम ऐसी नींव डाल रहे हैं जो 21 जन्म तक हमारा मकान सदा सजा सजाया रहे। तो हरेक ऐसी अपनी जवाबदारी समझते हो कि हम इस जड़ में बैठे हैं। अपनी कूट-कूट कर नींव पक्की कर रहे हैं? हमारा फाउन्डेशन है बुद्धियोग, नींव है याद की यात्रा। अगर हम नींव डालने वालों की बुद्धि भटकती है तो मकान का क्या होगा! अगर नींव डालने वाले, नींव डालते-डालते इधर-उधर चले जायें तो उस नींव का क्या होगा! हम सभी नींव में हैं, कहते भी हैं बाबा हम आपके हैं। हमें तो सर्विस की बहुत धुन है। लेकिन बुद्धि को बाहर भटकाते, तो वह नींव हिलेगी या मजबूत होगी? अगर नींव में बैठे-बैठे निकल जाते तो उसके लिए बाबा कहता- तुम्हें 100 गुणा दण्ड मिलेगा। अगर आज कोई कान्ट्रेक्टर लिखा-पढ़ी करके कान्ट्रेक्ट ले और पीछे धोखा दे तो उस पर केस चल जाता। आपने भी बाबा के लेज़र में नाम लिखाया, फार्म भरा, अब कहो मैंने तो यह सोचा ही नहीं था कि फार्म भरा माना फंस गये। सोच कर फंसे ना! अच्छाई के लिए फंसे ना! बाप के प्यार में फंस गये।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी